बड़ी मछलियों से ज़्यादा खतरे में छोटी मछलियां

ज़मीन पर देखें तो ऐसा लगता है कि हमेशा बड़े जानवरों पर ज़्यादा खतरा मंडराता है, बजाय छोटे जानवरों के। इसी के चलते बड़े जानवरों को संरक्षण की ज़रूरत भी ज़्यादा होती है। ऐसा माना गया था कि शायद यही स्थिति जलीय जीवों के मामले में भी देखने में आएगी। मगर कई अध्ययन दर्शा रहे हैं कि कम से कम समुद्रों में स्थिति इसके ठीक विपरीत है। समुद्री भोजन श्रृंखला के सबसे निचले स्तर पर स्थित मत्स्य प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा सबसे ज़्यादा है। *प्रोसीडिंग्स ऑफ दी नेशनल एकेडमी ऑफ साइन्सेज़* के 2 मई के अंक में प्रकाशित एक अध्ययन में बताया गया है कि छोटी प्रजातियों के स्टॉक चुक जाने की दर बड़ी प्रजातियों के मुकाबले दुगनी रही है।

आम तौर पर बड़ी समुद्री मत्स्य प्रजातियों पर काफी ध्यान दिया जाता है क्योंकि इनमें से कई सारी खतराग्रस्त हैं। ये बड़ी मछलियां औद्योगिक किस्म के मत्स्याखेट के प्रति बहुत संवेदी होती हैं। अतः इन्हें पकड़ने वाले इनके आखेट पर काफी सख्त नियंत्रण रखते हैं। छोटी मछलियां काफी प्रतिरोधी व उत्पादक होती हैं, इसलिए इन्हें ज़्यादा पकड़ा भी जाता है और कोई खास नियंत्रण भी लागू नहीं किए जाते।

धरती व समुद्र में प्रजातियों पर मानवीय दबाव अलग-अलग ढंग का होता है। धरती पर ऐसे वन्य जीव कम ही हैं जिनका दोहन व्यावसायिक स्तर पर किया जाता हो। धरती पर वन्य जीवों के लिए जो खतरा पैदा होता है, वह मूलतः उनके प्राकृतवास के विनाश के कारण होता है। जब प्राकृतवास नष्ट होते हैं तो बड़ी प्रजातियां ज़्यादा प्रभावित होती हैं क्योंकि उन्हें जीवनयापन के लिए बड़ी इकोसिस्टम की ज़रूरत होती है।

दूसरी ओर समुद्रों में मुख्य दबाव व्यावसायिक दोहन का है। ऐसे दोहन में बड़ी-छोटी प्रजातियों के बीच कोई भेद नहीं होता। हो सकता है कि अंततः बंदरगाहों तक बड़ी मछलियां ही पहुंचती हों, मगर छोटी मछलियां भी पकड़ी जाती हैं और छोड़े जाने से पूर्व वे मारी जाती हैं। इसके अलावा, एक तथ्य यह भी है कि कम उत्पादक प्रजातियों को नियंत्रित ढंग से पकड़ा जाता है जबकि ज़्यादा उत्पादक प्रजातियों को अनियंत्रित ढंग से पकड़ा जाता है। असर यह होता है कि मानवीय गतिविधि दोनों को बराबरी से प्रभावित करती है।

इस अध्ययन के लेखक कहते हैं कि उन्होंने अपने अध्ययन में सिर्फ औद्योगिक देशों के आंकड़े लिए हैं। हो सकता है कि विकासशील देशों तथा अप्रबंधित प्रजातियों के संदर्भ में स्थिति भिन्न हो। ***(स्रोत फीचर्स)***